भार उत्पादक स्वयं वहन कर लेता है। इसे निम्न चित्र से स्पष्ट कर सकते है —

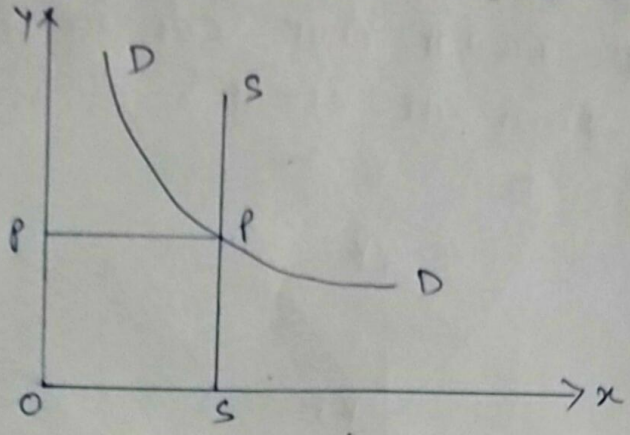

उपरोक्त चित्र में SS रेखा पूर्णतया बेलोच पूर्ति की रेखा है अतः मांग के घटने या बढ़ने पर पूर्ति पर कोई असर नही पड़ता है। यदि वस्तु पर कर लगाया जाता है तो भी वस्तु की कीमत पूर्ववत SP या OP_1 के ही बराबर होती है और वस्तु की पूर्ति हर दशा में OS के ही बराबर रहती है। अतः पूर्णतया बेलोच पूर्ति की दशा में उत्पादक कर के भार का विवर्तन उपभोक्ताओं की ओर नही कर सकता है। लेकिन प्रायः यह स्थिति की व्यवहार में कम पाई जाती है।

(iii) दोनों के बीच की स्थिति

प्रायः व्यवहार में पूर्णतया लोचदार व पूर्णतया बेलोच पूर्ति की स्थिति नही देखी जा सकती है। परन्तु इन दोनों के बीच की स्थिति व्यवहारिक है। इस स्थिति में क्रेता एवं विक्रेता पूर्ति के अनुसार करभार का विवर्तन एक दूसरे की ओर कर सकते है। अतः

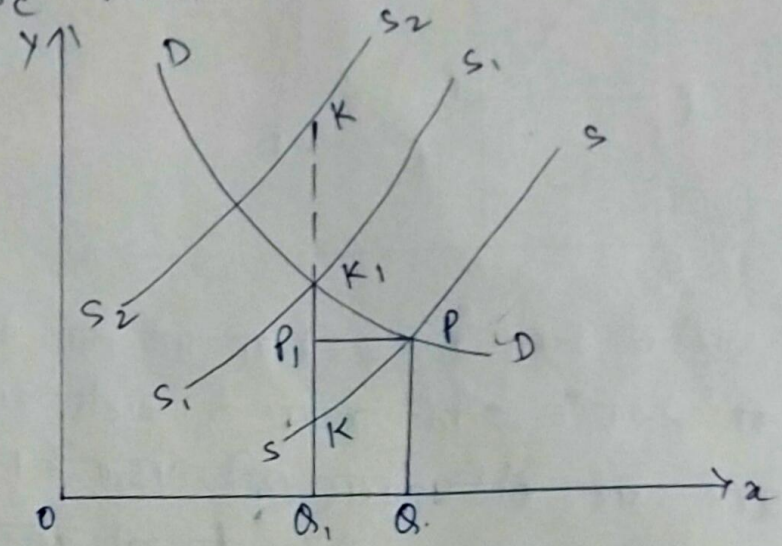

पूर्ति की लोच की विभिन्न स्थितियों में कर भार का विवर्तन क्रेताओं व विक्रेताओं के बीच कितना होगा इसे निम्न चित्र से स्पष्ट किया जा सकता है—

उपरोक्त चित्र में SS, S_1S_1, S_2S_2 क्रमशः पूर्ति की लोच की वक्र रेखाएं पूर्ति की लोच की विभिन्न दशाओं को व्यक्त करती है। चित्र में SS पूर्ति वक्र कम लोचदार वक्र है DD रेखा वस्तु की मांग को व्यक्त करती है। जब वस्तु पर KK_1 कर लगाया जाता है तब इस कर में से उपभोक्ता की ओर केवल P_1K_1 राशि के बराबर करों का विवर्तन हो पाता है और शेष राशि KP_1 के बराबर करों के भार को उत्पादक स्वयं वहन कर लेता है जो उपभोक्ताओं की अपेक्षा कई गुणा अधिक है। जब वस्तु की पूर्ति की लोच S_2S_2 पहले से अधिक लोचदार हो जाती है तब कर का विवर्तन विक्रेता की ओर बहुत कम होता है तथा करों का ~~[illegible]~~ अधिकांश

भार उपभोक्ताओं के ऊपर विवर्तित कर
दिया जाता है। S_2S_2 पूर्ति पर उत्पादक
मात्र P_1K_1 करभार को वहन करता है
जबकि उपभोक्ताओं की ओर P_1K के
बराबर कर विवर्तित किये जाते है।
इसप्रकार ज्यों ज्यों पूर्ति की लोच
बेलोच होती जायेगी त्यों त्यों करों का
विवर्तन कम होगा और पूर्ति की लोच
के बढ़ने के साथ साथ करों का विवर्तन
भी अधिक हो सकेगा। डाल्टन के अनुसार
" पूर्ति के लोच के आधार पर कर का
विवर्तन विक्रेता पूर्ति को कम कर के कर
के भार को क्रेताओं पर ढकेलते का
प्रयत्न करता है और क्रेता इसको मांग
कम कर के विक्रेताओं पर विवर्तित
करने का प्रयत्न करता है। इन दोनों
की सफलता इनकी सापेक्षिक शक्तियों
पर निर्भर करती है।

Dr Sandhya Rani
Dept of Economics